IIM नागपुर में लाइफ कोच व प्रेरक वक्ता गौरांग दास ने कहा

आशाहीन हो रही आज की पीढ़ी

■ **नागपुर,** व्यापार संवाददाता. लाइफ कोच व प्रेरक वक्ता गौरांग दास ने कहा कि आज लोगों को लगता है कि सबसे बड़ा नाश धन, यश, हेल्थ या प्रॉपर्टी का होता है, जबकि गीता के अनुसार सबसे बड़ा नाश आशा का है. आज की युवा पीढ़ी तेजी से आशाहीन होती जा रही है. यह माता-पिता, शिक्षकों और शैक्षणिक संस्थाओं के लिए चिंता का विषय है. आज हम जितना नवीनीकरण करते जाएं और उससे परिस्थिति भी बदलती चली जाएगी. इतनी ही तीव्रता से हमें अपनी सनातन शिक्षाओं का सहारा लेकर चेतना को विकसित करना होगा. आज की परिस्थिति को देखते हुए सनातन शिक्षा और आधुनिक शिक्षा का समन्वय बहुत आवश्यक है. दोनों के समन्वय से परिस्थिति में परिवर्तन लाया जा सकता है. आध्यात्मिक शिक्षा से चेतना में परिवर्तन लाया जा सकता है. आज युवाओं को अपनी छिपी ऊर्जा को पहचानना होगा. वे आईआईएम में आयोजित कार्यक्रम में संबोधित कर रहे थे. इस अवसर पर आईआईएम नागपुर के डायरेक्टर भिमराया मैत्री प्रमुखता से उपस्थित थे.

IIM NAGPUR

हेल्थ केयर की तरह काम करती हैं आध्यात्मिक संस्थाएं : वे कहते हैं कि आज देश में 20 लाख मंदिर हैं. जब हम मंदिरों की बात करते हैं, तो कुछ लोग कहते हैं कि समाज में मंदिर और आध्यात्म की क्या आवश्यकता है. आज मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारा सहित विविध आध्यात्मिक संस्थाएं आज एक हेल्थ केयर के रूप में काम कर रही हैं, जो कि व्यक्ति के मन की पीड़ा को दूर कर रही है. शरीर, मन और आत्मा तीनों का समन्वय पूर्ण स्वास्थ्य है. हम थर्मल, पेट्रोलियम सहित विविध बाहरी ऊर्जा की बात करते हैं लेकिन व्यक्ति के अंदर सबसे बड़ी ऊर्जा छिपी है. आज मंदिर, मस्जिद, चर्च सहित विविध आध्यात्मिक संस्थाएं ही हैं, जो व्यक्ति को ऊर्जा प्रदान करने में मदद करती हैं. मंदिर, मस्जिद, चर्च सहित अन्य संस्थाएं व्यक्ति की आत्मा का संबंध परमात्मा के साथ जोड़ने का कार्य करती हैं. यदि लोगों को आंतरिक रूप से शांत करने में सफल हुए तो पर्यावरण और समाज में शांति ला सकते हैं. इसी के लिए हमारा प्रयास शुरू है. मंदिर मन के लिए अस्पताल की तरह कार्य करता है जो कि मन की पीड़ा को दूर करता है. इसी तरह मंत्र मन के विकारों को दूर करता है. लोगों को व्यावहारिक जीवन में यह सब अपनाना चाहिए. हर धर्म व्यक्ति को मानसिक रूप से सक्षम बनाने में समर्थ है. लेकिन इस पर फोकस नहीं हो पा रहा है. धर्म का प्रतिनिधित्व नहीं किया जा रहा है. व्यक्ति इस पर फोकस करे तो निश्चित रूप से परिवर्तन हो सकता है.

आध्यात्मिक शिक्षा पर जोर

डायरेक्टर भिमराया मैत्री के अनुसार आईआईएम नागपुर में आध्यत्मिक शिक्षा पर बहुत जोर दिया जा रहा है. आधुनिक शिक्षा के साथ आध्यत्मिक शिक्षा बहुत जरूरी हो गई है. इसके चलते संस्थान इस पर पूरा फोकस कर रहा है. स्टूडेंट्स को आध्यात्मिक शिक्षा को लेकर अधिक से अधिक होने के लिए संस्थान कई कार्यक्रम आयोजित करता है.

नई शिक्षा पॉलिसी बदलेगी युवाओं का माइंड सेट

उन्होंने कहा कि नई शिक्षा पॉलिसी कई मायनों में अच्छी है. यह अच्छा परिवर्तन लाएगी. इसमें कई पहलू हैं जो युवाओं को स्वतंत्र रूप से एक उद्योजक बनाने में सफल होंगे. इसी में आध्यात्मिक शिक्षा पर भी फोकस किया गया है. यह पॉलिसी युवाओं का माइंड सेट बदलने में एक अच्छी भूमिका निभाएगी.

धर्म के प्रति पिपासु हैं भारतीय युवा

गौरांग दास कहते हैं कि भारतीय युवा धर्म के प्रति बहुत अधिक पिपासु हैं. वे आध्यत्मिक रूप से काफी जिज्ञासु हैं. कहीं न कहीं सामाजिक दबाव के चलते वे खुलकर नहीं बोल पाते हैं. वहीं धर्म के नाम पर होने वाली कलक को रोकने के लिए राजनीतिक दृष्टिकोण बदलना जरूरी है.